DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo- 9415376545

B.A PART- I (HONS) Paper - II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................ Lecture No. 19 Date 05-05-2020

गाँधी के राजनीतिक विचारों का मूल्यांकन

गाँधी के समुचित विचारों का अवलोकन करें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे भारत के प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित "रामराज्य" के सिद्धान्त के अनुयायी थे। उनके विचारों की तुलना पश्चिम के अराजकतावादियों से करना तर्क संगत प्रतीत नहीं होता है। दोनों पक्षों के विचारों में समानता हो सकती है और है भी। किन्तु दोनों में बहुत अन्तर भी विद्यमान है। गाँधी की मूलधारणा आध्यात्मिक है जबकि पश्चिम के चिन्तकों की मूल भावना भौतिकवादी है। इसलिए वे अपने आदर्श को किसी तर्क के सूत्रों में बाँधना नहीं चाहते थे। उन्होंने स्वयं कहा है कि "जब समाज स्वेच्छा से अहिंसा के नियम के अनुसार निर्मित किया जाता है, उसकी संरचना आज के समाज से भिन्न तत्वों पर आधारित होगी किन्तु मैं यह अग्रिम रूप से नहीं कह सकता कि पूर्णतः अहिंसा पर आधारित शासन कैसा होगा।" गाँधी के राजनैतिक आदर्श किसी शास्त्रीय पद्धति के आधार पर नहीं बने हैं बल्कि उनकी राजनैतिक मान्यताएँ पूर्णतः हर परिस्थिति में व्यवहारिक हैं। उनका कहना था कि हमारी दृष्टि चाहे वह राजनीति के क्षेत्र में ही क्यों ना हो, सत्य के आधार पर स्थित होनी चाहिए। आध्यात्मिक मूल्यों का मोलभाव नहीं हो सकता क्योंकि जो सत्य है, वही सही है। सत्य की स्थापना अव्यवहारिक प्रतीत हो सकती है क्योंकि आजकल हम यथार्थ की पकड़ आदि हो चुके हैं। हर स्थिति में हमको लगता है कि यथार्थ ही शायद सत्य और व्यवहारिक है। सही बात यह नहीं है। गाँधी का कहना था कि हम अपनी यथार्थ की गलत अवधारणाओं से सनातन मूल्यों को चुनौती नहीं दे सकते। राजनीति मानव जीवन के बाहर की वस्तु नहीं है। इसका संचालन मानव मूल्यों की परिधि के बाहर नहीं किया जा सकता।

PTO

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
MO- 945376545

B.A PART-I (HONS) Paper-II

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................

Date.05-05-2020

चाहे हम किस वाद या सिद्धान्त की बात करें। हमें स्मरण रखना होगा कि हम शाश्वत सत्यों की अवहेलना नहीं कर सकते। हिंसा अमानवीय है। इसलिए राज्य जिसकी सत्ता हिंसा पर टिकी है अमानवीय है। इसकी सत्ता की अनिवार्यता वहीं तक स्वीकार की जा सकती है जहाँ तक यह आध्यात्मिक शक्तियों के प्रतिकूल न हो।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गाँधी का मुख्य उद्देश्य राजनीति का आध्यात्मीकरण करना था। वे अपने को एक साधारण व्यक्ति मानते थे। उनका कहना था कि जो कदम आध्यात्मिक मूल्यों के विपरीत दिशा में जायेगा उसका समर्थन वे कभी नहीं कर सकेंगे। अपनी आस्थाओं के खिलाफ कभी भी नहीं समझौता किया। चाहे वह धार्मिक सिद्धान्त हो, सामाजिक सिद्धान्त हो या फिर राजनैतिक सिद्धान्त हो। उनके समस्त राजनैतिक जीवन की कहानी "सत्य के प्रयोग" पर आधारित है।

(समाप्त)

गाँधी के आर्थिक विचार